jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:42 PM Page 9

यह गाथा वैदिक युग में अस्थिदान करने वाले दधीचि की नहीं है, उस दधीचि की है जिसे हमने अपनी आँखों देखा, अपने कानों सुना, जिसकी सुदीर्घ राष्ट्र-साधना के हम साक्षी हैं, जिसकी उष्मा का हमें स्पर्श मिला। इस दधीचि ने अपने जीवन का तिल-तिल, क्षण-क्षण राष्ट्रीय नवोन्मेष के लिए होम किया, जगह-जगह सर्वांगीण विकास के दीपस्तंभ खड़े किए और अंत में अपनी तपोपूत देह को शोध के लिए दान कर दिया। इस देहदानी दधीचि की पहचान है नाना देशमुख। सच कहें तो केवल नाना। भले ही उनके माता-पिता ने उन्हें चंडिकादास नाम दिया हो, पर हजारों-हजारों परिवार उन्हें स्नेही नाना के रूप में ही देखते-जानते हैं, सचमुच के जगत नाना।

राष्ट्र ऋषि नानाजी